MWG-011: अर्थव्यवस्था में महिलाएं
गेस पेपर-I

प्र. उपयुक्त उदाहरणों के साथ सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों की अवधारणा, अर्थ और निहितार्थ पर चर्चा करें। दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के काम को मान्यता बढ़ाने के उपाय सुझाएं।

उत्तर। 'कार्य' को भागीदारी के रूप में परिभाषित किया गया है, जो शारीरिक या मानसिक प्रकृति की हो सकती है, किसी भी आर्थिक रूप से उत्पादक गतिविधि में, नकद या वस्तु के रूप में किसी भी प्रकार का मुआवजा/मजदूरी प्राप्त करने के साथ या उसके बिना। ऊपर बताए गए अनुसार 'काम' में लगे किसी भी व्यक्ति को 'कार्यकर्ता' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है, इसमें कोई भी गतिविधि शामिल हो सकती है जैसे कि खेत पर अवैतनिक कार्य, पारिवारिक उद्यम, खेती, घरेलू खपत के लिए दूध उत्पादन या किसी प्रकार का अंशकालिक कार्य, सभी कार्य के दायरे में आते हैं। कार्य में प्रभावी पर्यवेक्षण और कार्य की दिशा प्रदान करना भी शामिल है।

कार्य का अर्थ है ऐसे कार्यों को करना, जिसमें मानसिक और शारीरिक प्रयास का खर्च शामिल हो, और इसका उद्देश्य उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है जो मानव की जरूरतों को पूरा करती हैं। एक व्यवसाय, या नौकरी, वह काम है जो नियमित वेतन या वेतन के बदले में किया जाता है।

सभी संस्कृतियों में, कार्य अर्थव्यवस्था या आर्थिक व्यवस्था का आधार है। किसी भी संस्कृति के लिए आर्थिक प्रणाली उन संस्थाओं से बनी होती है जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण की व्यवस्था करती हैं। ये संस्थान संस्कृति से संस्कृति में भिन्न हो सकते हैं, विशेष रूप से पारंपरिक समाज बनाम आधुनिक समाज में।

पारंपरिक संस्कृतियों में, भोजन एकत्र करना और खाद्य उत्पादन अधिकांश आबादी के कब्जे वाले कार्य का प्रकार है। बड़े पारंपरिक समाजों में, बढ़ईगीरी, पत्थर की चिनाई और जहाज निर्माण भी प्रमुख हैं। आधुनिक समाजों में जहां औद्योगिक विकास मौजूद है, लोग बहुत अधिक विविध प्रकार के व्यवसायों में काम करते हैं।

महिलाओं द्वारा किया गया कार्य: महिलाओं ने हमेशा देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान दिया है, दोनों प्रत्यक्ष रूप से घर से बाहर काम करना और परोक्ष रूप से श्रम की आपूर्ति और उसके रखरखाव को सुविधाजनक बनाना। लेकिन, विकसित और विकासशील दोनों देशों में, महिलाएं संचयी असमानताओं से लदी हुई हैं, जो भेदभावपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक प्रथाओं के परिणामस्वरूप होती हैं जो समाज में महिलाओं की स्थिति को नियंत्रित करती हैं। आमतौर पर महिलाएं जो काम और गतिविधियां करती हैं, उनसे परिवार को कोई आय नहीं होती है। ये कार्य, जिन्हें उनकी प्राकृतिक भूमिकाओं के रूप में माना जाता है, उनकी प्रजनन और सामुदायिक संसाधन प्रबंधन भूमिकाओं से संबंधित हैं जो आर्थिक रूप से उत्पादक नहीं हैं, इस प्रकार, मान्यता प्राप्त और मूल्यवान नहीं हैं। कई समाजों में महिलाएं उत्पादक कार्य भी करती हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें भुगतान नहीं किया जाता है, वे पारिवारिक गतिविधियों तक ही सीमित रहती हैं। इसलिए, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में महिलाओं का योगदान लेखांकन के योग्य नहीं है, जिससे यह अदृश्य हो जाता है।

महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को निम्नलिखित श्रेणियों में रखा जा सकता है:

उत्पादक / अनुत्पादक कार्य दृश्यमान / अदृश्य कार्य

भुगतान / अवैतनिक कार्य आर्थिक / सामाजिक रूप

से उत्पादक कार्य अवैतनिक कार्य को ऐसे कार्य के

रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे कोई प्रत्यक्ष पारिश्रमिक नहीं मिलता है। यह दो श्रेणियों में हो सकता है: राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एसएनए) की संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की उत्पादन सीमा के भीतर आने वाले अवैतनिक कार्य। कहने का तात्पर्य यह है कि अवैतनिक कार्य जो राष्ट्रीय आय खातों के दायरे में आते हैं। इसे अवैतनिक एसएनए कार्य' के रूप में भी जाना जाता है जिसमें निर्वाह उत्पादन, पारिवारिक उद्यम में नियोजित अवैतनिक पारिवारिक श्रमिकों द्वारा किया गया कार्य और ईंधन और चारे का संग्रह जैसे कार्य शामिल हैं। अवैतनिक कार्य जो उत्पादन सीमा के बाहर है, लेकिन सामान्य उत्पादन सीमा के भीतर है, अवैतनिक गैर-एसएनए कार्य के रूप में संदर्भित किया जाता है जिसमें घरेलू प्रबंधन, देखभाल संबंधी गतिविधियाँ और अवैतनिक सामुदायिक सेवाएं शामिल हैं।

महिलाओं का उत्पादक कार्य: अवैतनिक आर्थिक कार्यों को उजागर करने की प्रवृत्ति का लिंग और विकास पर बहस के भीतर एक लंबा इतिहास रहा है, विकास में महिला (डब्ल्यूआईडी) परंपरा और डेनिश अर्थशास्त्री के काम पर वापस जा रहा है। बोसरुप की पुस्तक (1970 में आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका) का महत्व यह था कि इसने 'कल्याण दृष्टिकोण' की धारणाओं को चुनौती दी और कृषि अर्थव्यवस्था में महिलाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। एन। सामान्य तौर पर, WID को महिलाओं के कार्यक्रमों से अलग करने का एक बड़ा प्रयास किया गया था जो स्वास्थ्य या सामाजिक कल्याण के तहत किए गए थे। महिलाओं को जरूरतमंद लाभार्थियों के रूप में चित्रित करने के बजाय, WID के तर्कों ने महिलाओं को समाज के उत्पादक सदस्यों के रूप में दर्शाया।

कट्टरपंथी नीति में उत्पादन की पदानुक्रमित संरचना का उन्मूलन शामिल होगा, शायद किसी प्रकार के श्रमिकों के नियंत्रण और मजदूरी के बराबरी के द्वारा। इस हद तक कि यह श्रमिकों के बीच मतभेदों को समाप्त या कम कर देगा, यह सेक्स द्वारा मतभेदों को खत्म करने या कम करने का प्रयास करेगा।

एक कम क्रांतिकारी नीति में समान अवसर और सकारात्मक कार्य योजनाएं शामिल होंगी जो उत्पादन की संरचना और श्रम पदानुक्रम को दिए गए अनुसार लेती हैं, लेकिन प्रत्येक कार्य को पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूप से सुलभ बनाती हैं।

इन दोनों नीतियों में एक बड़ी खामी है। वे केवल उत्पादन की संरचना पर ध्यान केंद्रित करते हैं और प्रजनन के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को ध्यान में नहीं रखते हैं।
देखभाल प्रदाता के रूप में राज्य द्वारा निभाई गई भूमिका परिवार, स्वयंसेवी श्रम और/या बाजार को सौंपे गए देखभाल के भार को निर्धारित करेगी। यदि देखभाल अर्थव्यवस्था और उसके वितरण को विनियमित करने के लिए कोई सार्वजनिक नीति नहीं है, तो परिवार पर असमान रूप से बोझ है (विशेषकर उन महिलाओं के मामले में जिन्हें दो या तीन बार काम करना पड़ता है) और कम आय वाली महिलाओं के लिए सामाजिक उन्नति की संभावनाएं सीमित हैं। .
परीक्षण केवल यह था कि क्या दी गई गतिविधि को लाभ प्राप्त करने वाले व्यक्ति के अलावा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। इस प्रकार, खाना पकाना एक उत्पादक गतिविधि थी, खाना नहीं था।

यदि कोई गतिविधि किसी और के द्वारा की जा सकती है, तो सैद्धांतिक रूप से उन्हें इसके लिए भुगतान करना संभव है।
यानी उस वस्तु या सेवा के लिए संभावित बाजार है। उदाहरण के लिए, आपके लिए टीवी देखने के लिए किसी को भुगतान करने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि आपको लाभ नहीं मिलेगा। हालांकि, आपके लिए भोजन तैयार करने के लिए, या अधिक विवादास्पद रूप से, आपके साथ यौन संबंध बनाने के लिए किसी को भुगतान करना संभव है।
1947 में साइमन कुजनेट्स, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रीय खातों को डिजाइन और कार्यान्वित करने में मदद की थी, ने निर्वाह गैर-बाजार उत्पादन को शामिल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली की आवश्यकता पर तर्क दिया।
1950 और 1960 के दशक में कुछ देशों के राष्ट्रीय खातों में निर्वाह उत्पादन को शामिल करने का प्रयास किया गया था, लेकिन 1970 के दशक में महिला आंदोलन द्वारा यह धक्का था जो वास्तव में गैर-बाजार उत्पादन के महत्व पर केंद्रित था।

यह 'तीसरे व्यक्ति' मानदंड की अवधारणा है जो विकास की पश्चिमी धारणाओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती का प्रतिनिधित्व करती है, और यह एक नारीवादी चुनौती थी, जितना कि बोसर अप ने दिखाया कि यह महिलाएं थीं जिन्होंने अधिकांश निर्वाह कार्य किया था। फिर भी, इन महिलाओं की कई गतिविधियों को गिनने का उनका मामला यह था कि वे निर्वाह उत्पादन का हिस्सा थीं, न कि महिलाओं का घरेलू श्रम उत्पादक था। हालाँकि, इस बाद के तर्क को नारीवादी आंदोलन ने स्वीकार कर लिया। 1970 के दशक की शुरुआत में एन ओकले के मूलभूत कार्य के बाद अध्ययनों की एक श्रृंखला हुई जिसमें स्पष्ट रूप से गृहकार्य को काम के रूप में, उत्पादक के रूप में और मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया गया। लगभग चालीस साल बाद, आंकड़े अभी भी दिखाते हैं कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में लगभग दोगुने अवैतनिक घरेलू काम करती हैं। राष्ट्रीय खातों की नारीवादी आलोचना विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर की गई है, विशेष रूप से 1985 में महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की सिफारिश के साथ। 1995 में बीजिंग में अवैतनिक काम को मापने और मूल्य देने के लिए इसकी पुष्टि की गई थी। लेकिन यह मर्लिन वारिंग थीं जिन्होंने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक, काउंटिंग फॉर नथिंग के साथ एसएनए की नारीवादी आलोचना को लोकप्रिय बनाया। वारिंग ने उस प्रणाली का उपहास किया जिसने महिलाओं को 'आर्थिक रूप से निष्क्रिय' महिलाओं के रूप में वर्गीकृत किया, जिन्होंने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को प्रदान करने के लिए लंबे समय तक काम किया, जबकि मिसाइल साइलो में पुरुषों के 'विकास' को 'विकास' के रूप में महत्व दिया। परमाणु बटन।

महिलाओं के काम की मान्यता बढ़ाने के उपाय: अवैतनिक कार्य का मूल्यांकन या तो काम में गए श्रम इनपुट का मूल्यांकन करके या काम से उत्पन्न आउटपुट का मूल्यांकन करके किया जा सकता है। पूर्व को इनपुट पद्धति या मजदूरी आधारित मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है और बाद वाले को आउटपुट विधि या उत्पाद आधारित मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है।

इनपुट पद्धति: इनपुट पद्धति के तहत, व्यक्तिगत स्तर पर अवैतनिक कार्य के मूल्य की गणना व्यक्ति द्वारा अवैतनिक कार्य पर खर्च किए गए समय को उचित मजदूरी दर से गुणा करके की जाती है।
मजदूरी दर का चयन यहां एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। दो प्रकार की मजदूरी दरों का उपयोग किया जा सकता है:

प्रतिस्थापन मजदूरी दर यानी उस व्यक्ति को भुगतान की जाने वाली मजदूरी जो समान सेवा का उत्पादन करता है
मंडी,

अवसर लागत, अर्थात भुगतान न करने वाले व्यक्ति द्वारा छोड़ी गई मजदूरी दर
काम।

बाजार प्रतिस्थापन मजदूरी दर या तो एक सामान्य दर हो सकती है (उदाहरण के लिए, एक हाउसकीपर की मजदूरी दर) या विशेषज्ञ दर हो सकती है। सामान्य मजदूरी दर घरेलू वेतनभोगी कर्मचारी की मजदूरी हो सकती है, जैसा कि स्थानीय बाजार में प्रचलित है। प्रासंगिक घरेलू गतिविधियों के साथ तुलनीय विभिन्न विशिष्ट गतिविधियों की विशेषज्ञ मजदूरी दरें।

आउटपुट विधि: आउटपुट पद्धति के तहत, अवैतनिक कार्य के मूल्य की गणना आउटपुट की इकाइयों को आउटपुट की प्रति यूनिट मजदूरी दर से गुणा करके की जाती है। आउटपुट दृष्टिकोण द्वारा अवैतनिक कार्य के प्रत्यक्ष मूल्यांकन के लिए अवैतनिक कार्य के आउटपुट पर डेटा की आवश्यकता होगी, जैसे तैयार किए गए भोजन की संख्या, धुले और इस्त्री किए गए कपड़ों की संख्या, घर की सफाई का क्षेत्र, बच्चों को पढ़ाया जाना आदि और साथ ही डेटा उत्पादन की प्रति यूनिट मजदूरी दर पर, जैसे तैयार किए गए प्रत्येक भोजन का श्रम शुल्क, धोए और इस्त्री किए गए कपड़ों के प्रति आइटम का शुल्क, प्रति बच्चे की देखभाल के लिए श्रम शुल्क आदि।

अवैतनिक कार्य के लिए लेखांकन के दृष्टिकोण से, इनपुट-संबंधित लेखांकन आउटपुट से संबंधित लेखांकन से बेहतर है। उदाहरण के लिए, यदि महिलाओं को पानी लाने के लिए अधिक समय तक चलना पड़ता है, तो इनपुट-संबंधित लेखांकन समय इनपुट में वृद्धि दिखाएगा, हालांकि आउटपुट में कोई वृद्धि नहीं हुई है। इस प्रकार इनपुट से संबंधित लेखांकन में महिलाओं के गहन प्रयास को महत्व दिया जाता है।

अब बात करते हैं उन कारणों की जो हमारी दुनिया में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यों को अंधा बना देते हैं, यहां कुछ बिंदु हैं जो इस कारण को कवर करते हैं और दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के काम की मान्यता बढ़ाने के उपाय को भी उजागर करते हैं: • माध्यमिक भूमिका: जो भी हो श्रम बाजार में एक महिला जो करती है उसे उसकी गौण भूमिका के रूप में देखा जाता है। उसे घरेलू वित्त प्रदान करने में सक्षम के रूप में नहीं देखा जाता है और उसकी आय को केवल सीमांत आय या द्वितीयक आय के रूप में देखा जाता है। हालांकि, कभी-कभी परिवार के अस्तित्व के लिए सभी सदस्यों की आय की आवश्यकता होती है। • समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति: हमारा एक पितृसत्तात्मक समाज है। पीढ़ियों से चला आ रहा पितृसत्तात्मक रवैया नियोक्ताओं के लिए वास्तविकता का एहसास करना और महिलाओं को समान भागीदार के रूप में स्वीकार करना मुश्किल बना देता है। • काम के प्रति महिलाओं की प्रतिबद्धता: काम के प्रति महिलाओं की ईमानदारी के बारे में एक गलत धारणा है। नियोक्ता मानते हैं कि महिलाएं काम के लिए अनियमित होंगी। महिलाओं से अधिक अनुपस्थिति और कम ईमानदारी की उम्मीद की जाती है। पुरुषों के इस रवैये के कारण ही महिला श्रमिकों की मांग केवल कम कौशल और कम वेतन वाली नौकरियों तक ही सीमित है। • आधुनिकीकरण का प्रभाव: इस पारंपरिक रवैये के साथ-साथ आधुनिकीकरण और मशीनीकरण के प्रभाव ने भी महिलाओं के खिलाफ काम किया है। जब महिलाओं द्वारा पहले किए गए काम को करने के लिए नई मशीनें लगाई जाती हैं, तो मशीनों को चलाने के लिए पुरुषों को लगाया जाता है। यह महिला श्रमिकों के स्थान पर पुरुष कार्यबल द्वारा ले जाता है। लेकिन, चूंकि ट्रेड यूनियनों में महिलाओं को ठीक से संगठित नहीं किया गया था, इसलिए पर्याप्त प्रतिरोध नहीं है। यह हमें आधुनिकीकरण के मद्देनजर महिला श्रमिकों की मांग में बदलाव की तस्वीर देता है। • कानून का प्रभाव: महिला कामगारों की मांग में कमी लाने वाले अन्य कारक उनकी सुरक्षा के लिए बनाए गए कानून हैं। मातृत्व लाभ और क्रेच के प्रावधान जैसे कुछ लाभ नियोक्ताओं की मौजूदा लागत में खर्च जोड़ते हैं। समान काम के लिए समान वेतन का सिद्धांत भी महिला श्रमिकों को कम वेतन देने के नियोक्ता के झुकाव को कम करता है क्योंकि अतिरिक्त लाभ/प्रावधानों की लागत मजदूरी के ऊपर और ऊपर है। इससे महिला श्रमिकों की मांग में भी कमी आई है। • पितृसत्तात्मक मनोवृत्ति पर काबू पाने के लिए: जैसा कि हमने श्रम बाजार के विभाजन का मूल कारण देखा है, मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों में, महिलाओं की भूमिका के बारे में पितृसत्तात्मक रवैये में निहित है - एक गृहिणी, माँ और श्रमिकों के रूप में भी। इस रवैये को बदलने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। महिला संगठन को भी स्वयं महिलाओं द्वारा पितृसत्तात्मक रवैये के आंतरिककरण को उखाड़ फेंकने के लिए असाधारण प्रयास करने चाहिए। • श्रम बाजार के विभाजन के प्रतिकूल प्रभावों के बारे में जागरूकता: पुरुषों को प्रतिकूल प्रभाव से अवगत कराया जाना चाहिए श्रम बाजार विभाजन न केवल महिलाओं पर बल्कि नियोक्ताओं पर भी पड़ता है। महिलाओं को भी श्रम बाजार विभाजन के दुष्परिणामों से अवगत कराया जाना चाहिए जो इसे अपनी नियति के रूप में स्वीकार करते हैं। • नागरिक समाज की भूमिका: श्रम से संबंधित सभी संगठनों को इस तथ्य के प्रति ग्रहणशील बनाया जाना चाहिए और पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए लाभकारी रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में नियोक्ताओं को उन्मुख करने के लिए विशेष उपाय किए जाने चाहिए। • जेंडर समावेशी नीतियां: ऐसी नीतियां जो जेंडर संवेदनशील हैं और जेंडर समानता को बढ़ावा देती हैं, उन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कार्यस्थल पर प्रदर्शन के लिए शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए दोनों लिंगों के सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रोत्साहन स्थापित किए जाने चाहिए। • सरकार द्वारा हिमायत: महिलाओं से संबंधित सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा उन भ्रांतियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए जो 'घर' को महिलाओं के लिए काम का एकमात्र क्षेत्र मानते हैं। महिलाओं के काम का उनके बच्चों पर काल्पनिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। इस तरह की भ्रांतियों को दूर करने के लिए इस क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

• औपचारिक शिक्षा को प्रोत्साहन: यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास किया जाना चाहिए कि बालिकाएं समान संख्या में प्राथमिक शिक्षा के लिए नामांकन कराएं और ड्रॉप-आउट अनुपात को कम करने के लिए विशेष ध्यान दिया जाए। उन्हें विशेष छात्रवृत्तियां देकर उच्च शिक्षा में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि महिलाएं अध्ययन के ऐसे क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं जिन्हें पहले महिलाओं ने नहीं चुना था, तो उन्हें विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

• चाइल्डकैअर सुविधाएं: मातृत्व अवकाश, कामकाजी महिलाओं के बच्चों की देखभाल के लिए क्रेच आदि जैसी विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि महिलाएं श्रम बाजार के संगठित क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। चूंकि व्यक्तिगत नियोक्ता लागत वहन करने को तैयार नहीं होंगे, इसलिए राज्य को जिम्मेदारी उठानी चाहिए। इससे महिला कर्मचारियों के प्रति नियोक्ताओं का प्रतिरोध कम होगा।

• समान पारिश्रमिक: महिलाओं को समान व्यवसाय में पुरुषों के समान पारिश्रमिक मिलना चाहिए। यह इस तथ्य के बावजूद संभव नहीं हो पाया है कि भारत ने समान पारिश्रमिक कन्वेंशन की पुष्टि की है। इसलिए, यदि महिलाओं को श्रम बाजार में एकीकृत करना है तो कानून को संशोधित करने और उसे प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता है।

प्र. काम से क्या समझते हैं? महिलाओं के काम की गणना क्यों की जाती है? प्रासंगिक उदाहरणों की सहायता से महिलाओं के कार्यों की दृश्यता के महत्व पर चर्चा करें।
उत्तर। 'कार्य' को भागीदारी के रूप में परिभाषित किया गया है, जो शारीरिक या मानसिक प्रकृति की हो सकती है, किसी भी आर्थिक रूप से उत्पादक गतिविधि में, नकद या वस्तु के रूप में किसी भी प्रकार का मुआवजा/मजदूरी प्राप्त करने के साथ या उसके बिना। ऊपर बताए गए अनुसार 'काम' में लगे किसी भी व्यक्ति को 'कार्यकर्ता' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है, इसमें कोई भी गतिविधि शामिल हो सकती है जैसे कि खेत पर अवैतनिक कार्य, पारिवारिक उद्यम, खेती, घरेलू खपत के लिए दूध उत्पादन या किसी प्रकार का अंशकालिक कार्य, सभी कार्य के दायरे में आते हैं। कार्य में प्रभावी पर्यवेक्षण और कार्य की दिशा प्रदान करना भी शामिल है।

कार्य का अर्थ है ऐसे कार्यों को करना, जिसमें मानसिक और शारीरिक प्रयास का खर्च शामिल हो, और इसका उद्देश्य उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है जो मानव की जरूरतों को पूरा करती हैं। एक व्यवसाय, या नौकरी, वह काम है जो नियमित वेतन या वेतन के बदले में किया जाता है।

सभी संस्कृतियों में, कार्य अर्थव्यवस्था या आर्थिक व्यवस्था का आधार है। किसी भी संस्कृति के लिए आर्थिक प्रणाली उन संस्थाओं से बनी होती है जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण की व्यवस्था करती हैं। ये संस्थान संस्कृति से संस्कृति में भिन्न हो सकते हैं, विशेष रूप से पारंपरिक समाज बनाम आधुनिक समाज में।

पारंपरिक संस्कृतियों में, भोजन एकत्र करना और खाद्य उत्पादन अधिकांश आबादी के कब्जे वाले कार्य का प्रकार है। बड़े पारंपरिक समाजों में, बढ़ईगीरी, पत्थर की चिनाई और जहाज निर्माण भी प्रमुख हैं। आधुनिक समाजों में जहां औद्योगिक विकास मौजूद है, लोग बहुत अधिक विविध प्रकार के व्यवसायों में काम करते हैं।

कांग्रेस पार्टी ने 1939-40 में एक राष्ट्रीय योजना समिति का गठन किया था और इसके हिस्से के रूप में एक उप-समिति का गठन किया गया था जो महिलाओं पर सलाह देने वाली थी। इस उप-समिति की अध्यक्षता लक्ष्मीबाई राजवाड़े ने की थी और मृदुला साराभाई सदस्य सचिव थीं। इस उप-समिति द्वारा जो रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी, उसमें कहा गया था कि एक महिला कार्यकर्ता का अपनी कमाई पर पूरा नियंत्रण होना चाहिए; महिलाओं के लिए रात के काम पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए क्योंकि यह केवल उन्हें बाहर करता है, बल्कि उन व्यवसायों की खतरनाक प्रकृति को कम किया जाना चाहिए; परिवार को आर्थिक इकाई के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि यह महिला कमाने वालों को एक द्वितीयक भूमिका प्रदान करती है।

महिलाओं के काम की गणना: यह देखा गया है कि जहां श्रम का यौन विभाजन घर के भीतर एक बुनियादी विशेषता थी, वहीं यह बाहर भी बाजार में फैली हुई थी। जब महिलाएं रोजगार के लिए बाजार में आती हैं, तो आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाओं की दर यूरोप और विकसित दुनिया में सबसे ज्यादा होती है, जहां हर 100 पुरुषों के लिए 82 महिलाएं काम करती हैं। उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व में प्रत्येक 100 पुरुषों के लिए क्रमशः 35 और 39 आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाओं के साथ कुछ सबसे कम दर मौजूद हैं, उन्हें तीन कारणों से भेदभाव का सामना करना पड़ता है: पुरुषों के समान काम के लिए आय अंतर; कुछ नौकरियों में भीड़भाड़ जो महिलाओं के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं; और महिलाओं को कर्मचारियों के रूप में काम पर रखने के खिलाफ नियोक्ताओं के जन्मजात पूर्वाग्रह

भारत में, गृहकार्य सबसे पहले अध्ययन के साथ एक समस्या के रूप में सामने आया, जिसने महिलाओं का ध्यान 'दोहरे बोझ' की ओर आकर्षित किया, जिसका सामना महिलाओं को घर के काम और बाजार से संबंधित कार्यों में करना पड़ता है। बुजुर्गों, विकलांगों और बीमारों की देखभाल भी घरों में महिलाओं की जिम्मेदारी है। बाजार द्वारा शासित अर्थव्यवस्थाओं में, सामाजिक सुरक्षा न्यूनतम या न के बराबर होने के कारण, देखभाल अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है।

एक अग्रणी कार्य में, 1976-77 में, देवकी जैन और मालिनी चंद ने डेटा संग्रह प्रक्रियाओं में श्रमिकों की गणना के लिए घरेलू काम के निहितार्थ पर चर्चा की। महिलाओं के घरेलू कार्यों का पता लगाने के लिए सूक्ष्म समय के उपयोग का अध्ययन किया गया।

आपने पहले के खंड में पढ़ा है कि राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के आंकड़ों के लिए आंकड़ों के दो प्रमुख स्रोत हर दस साल में किए जाने वाले जनगणना सर्वेक्षण हैं, महिलाओं की रोजगार दर को परिभाषा और पद्धति के प्रति अत्यधिक संवेदनशील पाया गया है। आंकड़ा संग्रहण।

कम गणना का प्रमुख कारण 'पुरुष' की विचारधारा में कमाने वाले और 'घर के मुखिया' के रूप में स्थित है, जिसका निहितार्थ यह है कि महिलाओं का काम गौण और पूरक है। विशेष रूप से, अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर ध्यान आकर्षित किया गया है।

1951 की जनगणना तक लोगों की आर्थिक गतिविधियों के आंकड़े 'आय' और 'निर्भरता' की अवधारणा पर आधारित थे। 1961 की जनगणना के बाद से, समय या श्रम शक्ति की अवधारणा के संदर्भ में मापी जाने वाली कार्य की अवधारणा का पालन किया गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय (ILO) की सिफारिशों के अनुसार है और आमतौर पर अधिकांश देशों में इसका पालन किया जाता है। काम की अवधारणा के आधार पर 'श्रमिक' और 'गैर-श्रमिक' के रूप में जनसंख्या का वर्गीकरण 1961 की जनगणना में पेश किया गया था।

इस प्रकार, 1971 की जनगणना में, प्रत्येक व्यक्ति से पूछा गया कि उनकी 'मुख्य गतिविधि' क्या थी, अर्थात वह स्वयं को अधिकतर कैसे व्यस्त रखता है। इस प्रश्न के आधार पर, जनसंख्या को 'श्रमिक' और 'गैर-श्रमिक' के रूप में मुख्य गतिविधि की दो व्यापक धाराओं में विभाजित किया गया था। व्यापार में नियमित कार्य के मामले में अपनाई गई संदर्भ अवधि गणना की तारीख से एक सप्ताह पहले की थी। एक व्यक्ति मुख्य था

कार्यकर्ता यदि उसने इस संदर्भ अवधि के दौरान किसी एक दिन ऐसे किसी भी नियमित कार्य में भाग लिया था और इसे उसकी मुख्य गतिविधि के रूप में माना गया था।
मौसमी श्रमिकों के मामले में, पिछले एक वर्ष में ऐसे काम के संदर्भ में एक व्यक्ति की मुख्य गतिविधि का पता लगाया गया था, भले ही वह व्यक्ति गणना से पहले सप्ताह में आर्थिक रूप से सक्रिय न हो। 1981 की जनगणना में, आर्थिक प्रश्नों को तैयार किया गया ताकि पहले जनसंख्या को विभाजित किया जा सके; श्रमिक - जिन्होंने जनगणना से पहले के वर्ष के दौरान किसी भी समय काम किया था; और गैर-श्रमिक - वे लोग जिन्होंने वर्ष के दौरान बिल्कुल भी काम नहीं किया था।

जनसंख्या को इन व्यापक समूहों में वर्गीकृत करने के बाद, उन लोगों को उप-विभाजित करने का प्रयास किया गया जिन्होंने कभी भी दो समूहों में काम किया था।

'मुख्य श्रमिक' अर्थात वे जो वर्ष के अधिकांश भाग के लिए आर्थिक गतिविधियों में लगे हुए थे
यानी छह महीने (183 दिन) या उससे अधिक की अवधि के लिए और
'सीमांत कार्यकर्ता' यानी वे जिन्होंने कुछ समय के लिए काम किया था लेकिन इस दौरान बड़े हिस्से के लिए नहीं
पिछले साल।

यह पता लगाने का भी प्रयास किया गया कि जो लोग गैर-श्रमिक थे या जो सीमांत श्रमिक थे, वे काम की तलाश में थे या उपलब्ध थे। 1991 की जनगणना में आर्थिक प्रश्नों को तैयार करते समय, 1981 की जनगणना में प्रयुक्त अवधारणाओं और परिभाषाओं को जारी रखने के अलावा मौसमी और नियमित गतिविधियों दोनों के लिए 'एक वर्ष' की समान लंबी संदर्भ अवधि को अपनाने का निर्णय लिया गया था। इसके अलावा, महिलाओं और बच्चों द्वारा उनके परिवार के खेतों और पारिवारिक उद्यमों में अवैतनिक योगदान को पकड़ने की दृष्टि से, काम से संबंधित मुख्य प्रश्न में 'खेत या पारिवारिक उद्यमों में अवैतनिक काम सहित' शब्दों को शामिल करने के लिए भी अपनाया गया था। श्रम सांख्यिकीविदों के 13वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 1982 के संकल्प संख्या 1 के अनुसार, 'आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या में किसी भी लिंग के व्यक्ति शामिल हैं, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए श्रम की आपूर्ति प्रस्तुत करते हैं'।

इस परिभाषा के अनुसार, आर्थिक गतिविधियाँ बाजार की गतिविधियाँ या गैर-बाजार गतिविधियाँ हो सकती हैं।
बाजार की गतिविधियाँ वे हैं जिनमें कोई व्यक्ति वेतन या लाभ के लिए वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन करता है। गैर-बाजार आर्थिक गतिविधियाँ हैं:

• स्वयं के उपभोग के लिए प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन। • स्वयं के उपभोग के लिए प्राथमिक
वस्तुओं का प्रसंस्करण। • अचल संपत्तियों का खुद का उत्पादन।

एनएसएसओ ने 'काम' या 'लाभदायक गतिविधि' को वेतन, लाभ या पारिवारिक लाभ के लिए की जाने वाली गतिविधि या दूसरे शब्दों में, 'राष्ट्रीय उत्पाद' के लिए मूल्य जोड़ने वाली गतिविधि के रूप में परिभाषित किया है।
एनएसएसओ ने रोजगार और बेरोजगारी को मापने के लिए तीन अलग-अलग तरीकों को अपनाया है। तीन दृष्टिकोण हैं: • 'सामान्य स्थिति' दृष्टिकोण, सर्वेक्षण की तारीख से पहले 365 दिनों की संदर्भ अवधि के साथ; • 'वर्तमान साप्ताहिक स्थिति' दृष्टिकोण, की तारीख से पहले सात दिनों की संदर्भ अवधि के साथ

सर्वेक्षण;
• 'वर्तमान दैनिक स्थिति' दृष्टिकोण, संदर्भ अवधि के रूप में सर्वेक्षण की पूर्ववर्ती तिथि के सात दिनों के प्रत्येक दिन के साथ।

कड़ाई से बोलते हुए, यह दृष्टिकोण व्यक्ति-दिनों के वर्गीकरण का प्रयास करता है न कि व्यक्तियों का। उपरोक्त दृष्टिकोणों में से, 'सामान्य स्थिति दृष्टिकोण' के आधार पर रोजगार और बेरोजगारी का मापन वह है जिसकी व्यापक रूप से जनगणना वर्गीकरण के साथ तुलना की जा सकती है। 'सामान्य स्थिति दृष्टिकोण' की संदर्भ अवधि एक वर्ष है। इस दृष्टिकोण में, जिस गतिविधि पर एक व्यक्ति ने सर्वेक्षण की तारीख से पहले पिछले 365 दिनों का अपेक्षाकृत अधिक समय बिताया, उसे व्यक्ति की प्रमुख स्थिति के रूप में माना जाता है। तदनुसार, किसी व्यक्ति की प्रमुख 'सामान्य स्थिति' को कार्यरत या नियोजित माना जाता है, यदि वह किसी एक या अधिक कार्य गतिविधियों में 365 दिनों की संदर्भ अवधि के दौरान संलग्न था। एक व्यक्ति को 'काम की तलाश या उपलब्ध' या 'बेरोजगार' के रूप में माना जाता है, यदि वह काम नहीं कर रहा था, लेकिन निर्दिष्ट संदर्भ अवधि की अपेक्षाकृत लंबी अवधि के लिए काम की तलाश कर रहा था या उपलब्ध था। एक व्यक्ति को 'श्रम बल में नहीं' माना जाता है, यदि वह गैर-लाभकारी गतिविधियों में से किसी एक में अपेक्षाकृत लंबी अवधि के लिए लगा हुआ था।

महिलाओं के काम की दृश्यता का महत्व: महिलाओं के काम की अदृश्यता, अनुत्पादकता और अवैतनिक प्रकृति उन्हें पूंजीवादी समाज में हाशिए पर धकेल देती है और निम्न स्थिति प्रदान करती है।
इस प्रकार, एक तरफ, महिलाओं के काम की अदृश्यता नीतिगत निहितार्थों में चूक की ओर ले जाती है, जहां उनका योगदान हाशिए पर है, जिससे वह एक 'आश्रित' आर्थिक इकाई बन जाती है। दूसरी ओर, महिलाओं को ऐसे काम करने के कारण उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है जो सीधे तौर पर परिवार की आय में वृद्धि नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार, अवधारणात्मक और साथ ही संचालन संबंधी पूर्वाग्रहों के कारण काम की अदृश्यता के परिणामस्वरूप महिलाओं को 'दोहरी मार' का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि जब वे निजी क्षेत्र से बाहर काम करते हैं, तो वे उन क्षेत्रों/सेवाओं में बहुतायत से लीन हो जाते हैं जहां आर्थिक गतिविधियों का लाभ महिला कर्मचारियों को नहीं मिलता है।

भारत में, यह समझने के लिए कि महिलाओं को रोजगार क्यों और कहाँ मिलता है, भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास पैटर्न को ध्यान में रखना होगा। भारत में, स्वतंत्रता के तुरंत बाद योजना का उदय हुआ और मॉडल

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources